B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Management & Leadership
Course – 11 (e)
Unit – 2 (c)
Topic – <u>खेल का मैदान (A Playground)</u>
Lecture No:- 18

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N.D. College,
Shahpur Patory
(Samastipur)

खेल का महत्व

आधुनिक शिक्षा का उद्धेश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए खेल–कूद तथा शारीरिक क्रिया का उतना ही महत्त्व है, जितना पढ़ने–लिखने आदि मानसिक क्रियाओं का। इसलिए किसी भी विद्यालय में खेल–कूद के मैदान का होना उतना ही जरूरी है, जितना कक्षा के कमरों का। खेल–कूद बच्चों के विकास के प्राकृतिक माध्यम है। बालकों के लिए खेल–कूद की मांग एक अद्भुत मांग है। इसी माध्यम से ये अपने शरीर का न केवल विकास करते हैं, बल्कि इसे स्वस्थ, सबल तथा स्फूर्त्तियुक्त रख पाते हैं। इस मांग की पूर्त्ति के लिए विद्यालय मं खेल–कूद की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए। इसके लिए एक ऐसे खुले मैदान का होना जरूरी है, जहां बालक दौड़–धूप सके, उछल–कूद सके, तरह–तरह के खेल खेल सकें। खेल–कूद के सामाजिक महत्त्व कम नहीं है। खेल–कूद में बालक एक–दूसरे से मिल जुल कर कार्य करना, नेतृत्त्व ग्रहण करना, अनुशासन में रहना, सहयोग करना आदि अनेक सामाजिक गुण सीखते हैं। स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना भी यहां जागृत होती है, जो व्यक्तित्त्व के विकास में सहायक होती है। खेल के बहुधा 'जनतन्त्र का पालना' कहा गया है। खेल के इन शैक्षिक महत्त्वों के दृष्टि से विद्यालय में खेल–कूद के मैदान का होना जरूरी है।

उपयोग की रीति

अब प्रश्न है कि खेल–कूद के मैदान का उपयोग कैसे किया जाए? इस प्रश्न का उत्तर बहुत कुछ मैदान की छोटाई–बड़ाई तथा विद्यालय के आर्थिक साधनों पर निर्भर करता है। यदि पर्याप्त जगह उपलब्ध हो तो इसका प्रयोग निम्नलिखत ढ़ंग से होना चाहिएः–

1. मैदान के चौरस भाग में आधुनिक ढ़ंग के खेल; जैसे– फुटबॉल, हॉकी, बॉलीबॉल तथा क्रिकेट आदि के लिए एक मैदान तैयार कर लिया जाय।
2. मैदान के एक भाग में छोटे बच्चों के लिए खेल के प्रसाधन रखे जायें; जैसे– सी–सॉ, सरसरवा आदि। दूसरे भाग में किशोरों के लिए व्यायाम के प्रसाधन रखे जायें; जैसे– पैरेलल बार आदि।
3. मैदान का एक भाग ड्रील के लिए सुरक्षित रखा जाए, जहां जगह की कमी हो वहां ड्रील फुटबॉल के मैदान में ही कराया जाय।

(समाप्त)